VOLUME-7, ISSUE-3, MARCH-2018 • PRINT ISSN No 2277 - 8160

Original Research Paper

Hindi

रामदरश मिश्र के 'पानी के प्राचीर' उपन्यास में ग्राम्य जीवन का यथार्थ

मुकेश चन्द शोध छात्र (हिन्दी विभाग), महारानी श्री जया राजकीय महाविद्यालय, भरतपुर (राज.)

KEYWORDS :

भारत गाँव का देश है। देश की लगभग सत्तर प्रतिशत आबादी गाँव में रहती है। जैसाकि कहा गया है– 'भारत माता ग्रामवासिनी।' अगर कहा जाए कि भारत की आत्मा गाँव में बसती है, तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। आज भी गाँव देश की मूलभूत इकाई हैं। गाँव जीवन यथार्थ के प्रतिनिधि है। रामदरश मिश्र हिन्दी के उन रचनाकारों में से है, जो अपने सर्जन में सदैव भारतीय ग्रामचेतना से जुड़े रहे है। वस्तुतः भारतीय ग्राम जीवन के प्रति मिश्र जी का असाधारण आकर्षण रहा है, जिसके फलस्वरूप उनके उपन्यासों में भी ग्राम्य–जीवन के यथार्थ का निरूपण मिलता है। मिश्र जी का पहला उपन्यास 'पानी के प्राचीर' सन् 1961 ई० में प्रकाशित हुआ। तब से लेकर अब तक लगभग उनके ग्यारह उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं; जिनमें से 'पानी के प्राचीर', 'जल टूटता हुआ', सूखता हुआ तालाब' और 'बीस बरस' में तो मुख्य रूप से ग्राम जीवन के यथार्थ का ही चित्रण हुआ है।

'पानी के प्राचीर' उपन्यास में ग्राम्य यथार्थ

रामदरश मिश्र का 'पानी के प्राचीर'(1961) उपन्यास गोरखपुर जिले की दो नदियों से घिरे हुए एक पिछड़े भू भाग की कहानी कहता है। कहानी स्वाधीनता प्राप्ति तक की है। इस उपन्यास में पूर्वी उत्तरप्रदेश के पांडेपुरवा नामक अभावग्रस्त गाँव की दशा का चित्रण हुआ है। यहाँ राप्ती और गोर्रा नामक नदियों और बरसाती नालों से घिरे इस गाँव की अभावों से जूझती, निर्धनता, पिछड़ेपन, आपसी कलह और जमींदार के शोषण की शिकार गाँव की जिंदगी का यथार्थ अंकन है। 'पानी के प्राचीर' उपन्यास में स्वतंत्रता पूर्व ग्रामीण जीवन का यथार्थ समग्र रूप में चित्रित हुआ है, जिसे निम्न शीर्षकों के अंतर्गत विवेचित विश्लेषित किया जा सकता है–

1. वर्ण–व्यवस्था और जातीय–विवाद–भारतीय जाति–प्रथा यहाँ पूर्व प्रचलित वर्ण–व्यवस्था का ही विकृत रूप है। 'पानी के प्राचीर' उपन्यास में भी इसका निरूपण हुआ है। यहाँ नीरू के विवाह के संबंध में चाचीकहती है– ''आजकल जाने क्या हो जाये बिटिया। मगर नहीं, नीरू ऐसा नहीं करेगा। जाति–पाँति सनातनी चीज है। वह किसी के तोड़ने से टूटगी भला।''[1] उत्तर में नीरू भी कहता है– ''नहीं माँ, 'नीरू बोला– 'मैं तो अपनी ही जाति की लड़की ले आऊँगा। वह बड़ी अच्छी लड़की है माँ। वह छह में पढ़ती है सुशील और सुन्दर लड़की है माँ।''[2]

'पानी के प्राचीर' उपन्यास में जाति–व्यवस्था के यौन संबंधों की स्थापना संबंधी प्रतिबंध एवं उसके खण्डन का चित्रण मिलता है। बैजनाथ यौन संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विजातीय नवयुवती विधवा बिन्दिया चमारी को रखेल के रूप में अपने पास में रख लेता है।हर आदमी बिंदिया को अपने करीब लाने की कोशिश करता। वह जानती थी कि– ''इन छोकरों और बूढ़े बैलों की आसक्ति केवल मेरी देह के लिए है। अँधेरे में चूसकर ये बाभन लोग उजाले में पंडित बने घूमेंगे और उसकी छाया से भी बचने का ढ़ोग रचेंगे।''[3]कैसे हैं बाभन कुत्तेरात में विष्टा तक खा लेंगे और दिन को ओठों का पान पीक पोतकर महकने की कोशिश करेंगें।''[3]बैजू को बिंदिया के साथ पकड़ा जाने पर समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता है। उसके साथ खान पान, व्यवहार आदि प्रतिबंधित किया गया है। यही जातिवाद भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के समय राजनीतिक पिछलग्गुओं का मोहरा बन जाता है। यहाँ भी बैजू और बिंदिया का प्रसंग उठाया जाता है।

ग्रामीण क्षेत्र में नीची जाति के लोगों को तुच्छ समझा जाता है। उन्हें हर समय दबाने का प्रयत्न किया जाता है। इसके संकेत निम्न पंक्तियों से स्पष्ट है– ''क्या समझता है हमारे लड़के को? क्या कोई तेली, तमोली, कुरमी, कोहार समझ लिया है हमारे बेटे को कि उस पर हाथ छोड़ता है।''[4]

2. वैवाहिक संबंधों की विडम्बना–विवाह एक सार्वभौमिक संस्था है। वैवाहिक जीवन की एक प्राचीन विसंगति है बाल विवाह। पानी के प्राचीर' उपन्यास में भी इस प्रथा का प्रभाव परिलक्षित होता है। प्रथा के अनुसार नीरू की माँ रूपा नीरू को अल्पवय में ही उसकी शादी की चिंता सता रही है– ''नीरू इतना बड़ा हो गया मगर कोई भी उसके ब्याह के लिए नहीं आया। एकाध आते भी हैं तो गाँव के लोग काट देते है। ××× नीरू सत्रह साल का हो गयाा, अभी कहीं कोई उम्मीद नहीं है।''[5]ग्रामीण समाज में लड़कियों की कम उम्र में शादी करना अच्छा माना जाता है। सयानी हो जाने पर उसकी शादी करना हेय दृष्टि से देखा जाता है। इस संबंध में लेखक ने लिखा है– ''लीला तेरह साल की हो गई। विवाह की अवस्था आ गई। ××× लीला अभी छोटी है तो क्या हुआ, एक साल में पूरी औरत बन जायेगी।''[6]

दहेज प्रथा के प्रचलन का दुष्परिणाम है अनमेल विवाह। बैजू अपनी बहिन गैंदा का विवाह एक बूढ़े शुकुल से कर देता है। परिणामतः गैंदा अपनी यौवनावस्था के प्रारंभकाल में ही विधवा होकर अपने जन्म स्थान वापस आ जाती है। वहाँ आने के उपरांत वह किस निर्णय पर पहुँचती है, गैंदा के मुँह से सुनिए– ''मैं राँड हूँ, लोग मेरा मुँह देखना पाप समझते है। ××× एक चमाइन से भी मेरी हालत गई गुजरी है। दुनिया में सहारा कौन हो सकता है? ××× खुद अपना भाई मेरे दर्द को नही जान सका तो औरों को क्या कहूँ?''[7]

3. मानव–मूल्यों का विघटन एवं संक्रमण–ग्रामीण जीवन के सामाजिक मूल्यों की विघटन प्रक्रिया का स्वरूप 'पानी के प्राचीर' में भी प्रस्तुत हुआ है। इस उपन्यास में भी मानवीय मूल्य ध्वस्त हो रहे हैं। गाँव में दलबन्दी के कारण पारस्परिक झगड़े बढ़ रहे है।गाँव की इस विकृत राजनीतिक दलबन्दी के कारण नीरू विक्षुब्ध है– ''पट्टीदारी, पट्टीदारी ने मेरा घर फूँका, पट्टीदारी ने मेरा खेत काटा, पट्टीदारी ने मेरे खेत रख लिए हैं। पट्टीदारी का अगुवा मुखिया मेरे परिवार की ज़िन्दगी के साथ खेलवाड़ करना चाहता है, अभी पट्टीदारी लगी हुई है। ये बेवकूफ अपनी बेवकूफी से लड़ाई शुरू कर देंगे और पट्टीदारी का जोश उभाड़कर पूरे गाँव को आग में झोंक देंगे।''[8]

ग्राम जीवन की इस विषैली राजनीति में न्याय और सत्य के सारे मूल्य धराशायी हो गए है। समस्त गाँव इस टूटन की प्रक्रिया से ग्रस्त है। प्रेम और सौहार्द्र, वैमनस्य और शत्रुता में बदल गए हैं। किसी को मार डालना और मर जाना सहज बात है। यहाँ नैतिक मूल्य ध्वस्त हो रहे है। स्वार्थी प्रवृत्तियों के कारण समाज विघटन के कगार पर खडा है और मानवता कराह रही है।

4. नारी एवं यौन विकृत्तियों का चित्रण–ग्रामीण जीवन में प्रचलित नारी संबंधी यथार्थ का चित्रण 'पानी के प्राचीर' उपन्यास में भी किया गया है। मुखिया के दरवाजे पर मीटिंग होती है। वहाँ पर पपीहा पांडे के बेटे छेदी, बेनी काका, रग्घू बाबा आदि उपस्थित हैं। जहाँ पर उपेक्षित नारी जाति के संबंध में प्रसंग चल रहा है। छेदी कह रहा है–''मेरे विचार से लड़कियों को पढ़ाना, उन्हें इतनी आजादी देना अधर्म है। भला बताइए तो, जिस नारी के बारे में भक्त शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास महाराज ने लिखा है कि 'अवगुन आठ सदा उर रहई' और इसलिए तो ताड़ना की पात्रा है–

ढोल गँवार सूद्र पसु नारी।
ये सब ताड़न के अधिकारी।।

उसी नारी जाति को लोग आज आजादी दे रहे हैं। ये मरदों के साथ साथ सभा समाजों में डोलती फिरती हैं। हमारे वेद–शास्त्र में लिखा है, नारी तो पुरूष के पैरों की जूती है, इसका काम घर में रहकर रसोई बनाना है।''[9]

'पानी के प्राचीर' उपन्यास में भी पारस्परिक अवैध यौन संबंधों की विविध घटनाएँ संकलित है। पांडेपुर की बिंदिया चमारिन के पीछे सारा गाँव पागल है। बैजू द्वारा लड़ाई में शामधारी के मर जाने पर उसकी पत्नी गुलाबी विधवा हो जाती है। संयमशीला गुलाबी कालोग बहाना बना बनाकर उससे छेड़कानी करतेथे– ''गुलाबी के सामने सतीत्व का तो अब कोई महत्त्व था नहीं, किन्तु वह गाँव वालों की घातक दुहरी प्रवृत्ति से परेशान हो गई। एक ओर ये गाँव वाले उसकी शिकायत करते हैं, दूसरी ओर उसका हाथ, निचोड़ने के लिए माँस भक्षी पशु की तरह चक्कर काटते हैं।''[10]

5. दल एवं राजनीति का घटाटोप–ग्रामीण समाज में दलबंदी का माहौल पाया जाता है। लोग दलबंदी के कारण आपस में लड़ते झगड़ते रहते हैं। अपनी पट्टीदारी के लिए राजनीति का खेल खेलते हैं। 'पानी के प्राचीर' उपन्यास में भी यहीं स्थिति है। नीरू तिलमिलाकर कहता है– ''पट्टीदारी, पट्टीदारी ने मेरा घर फूँका, पट्टीदारी ने मेरा खेत काटा, पट्टीदारी ने मेरे खेत रख लिए है, पट्टीदारी का अगुवा मुखिया मेरे परिवार की ज़िन्दगी के साथ खेलवाड़ करना चाहता है। अभी पट्टीदारी लगी हुई है। ये बेवकूफ अपनी बेवकूफी से लड़ाई शुरू कर देंगे और पट्टीदारी का जोश उभाड़कर पूरे गाँव को आग में झोंक देंगे।''[11]

भारत की आजादी का आन्दोलन जोरों पर था। गाँव गाँव में जुलूस निकाले जा रहे थे। सभी जाति के लोग इसमें सहयोग दे रहे थे। 15 अगस्त, 1947 को देश आजाद हो गया। गाँव की यथार्थ स्थिति अभी भी दयनीय थी। इस संबंध में निरंजन (नीरू) भाषण देते हुए कहता है– '' गाँव के चारों ओर पानी की ये दीवारें जो आप देख रहे हैं,

उन्हें गुलामी ने और भी मजबूत किया है। इन प्राचीरों ने हमें एक छोटे से दायरे में घेर रखा है। बाहर से न कोई रोशनी आती है, न कोई शक्ति। इन दीवारों ने हमें घेरकर दुनिया की सारी सुविधाओं से वंचित कर दिया है। ××× दलबंदियाँ होती हैं। घर और खेत फूँके तापे जाते हैं। ××× आज हमें आजादी मिली है। अब ये पानी की दीवारें टूटेंगी, टूटेंगी, बाहर से नई रोशनी आएगी। ××× सड़कों के चौथे पथों से बाहर की सुविधाएँ हमारे गाँव की ओर दौड़ेगी–

पानी की ये दीवारें टूटेगी
नये सपने खिलेंगे
नयी रोशनी लहरायेगी।''[12]

6. गरीबी, पिछड़ापन और महाजनी शोषण– 'पानी के प्राचीर' उपन्यास में स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्वकालीन ग्रामीण अंचल की भौगोलिक पृष्ठभूमि एवं वहाँ की जनता की आर्थिक स्थिति के चित्र प्रस्तुत हुए हैं। ग्रामीण जनता के भोजन की स्थिति से उनकी आर्थिक दशा का परिचय सहज ही मिल जाता है। लेखक ने यहाँ लिखा है– ''शाम को बथुए और सरसों का साग भर पेट खाकर सुमेश परिवार आग ताप रहा था। ''[13]गाँवों में रहने वाले घरों की स्थिति निम्न थी– 'घर क्या था जर्जर दीवारों से घिरा एक मकान, जिसके एक ओर की दीवारें आधी गिरी हुई थी और तीन ओर की दीवारें गिरने के इन्तजार में थी। ऊपर टूटी हुई कड़ियों और धरनों पर खपरैल अँटका हुआ था, जिसमें कई जगहों पर बड़े बड़े छेद हो गए थे और बरसात के दिनों में उनसे होकर पूरा आसमान घर में उतर जाता था।''[14]

गाँव के कृषक एवं मजदूर वर्ग के आर्थिक पिछड़ेपन का एक कारण जमींदार एवं पूँजीपति वर्ग द्वारा उनका आर्थिक शोषण रहा है।जमींदार गजेन्द्र बाबू के सीनियर तहसीलदार मुंशी दुक्खीलाल ग्रामीण कृषकों से कर वसूल करने का कार्य करते है। यहाँ लेखक ने लिखा है– ''दरबार में बीसों किसान पकड़कर लाए गए थे। सबके सब फटे हाल नंगे बदन, धू धूसरित सर वाले। मुंशी जी सबको बारी बारी से मुर्गा बनाकर पीट रहे थे, चिलचिलाती धूप चोट के ऊपर लेपन कर रही थी। ××× मुंशी जी के हाथ दुख गये थे। उनके आदेश पर सिपाही किसानों की मरम्मत कर रहे थे। किसान कसाई के हाथ में पड़ी गाय की तरह निरही आँखों से दया की भीख माँग रहे थे।''[15] सामंतीय शोषण की परिणति महाजनी सभ्यता के रूप में हुई। 'पानी के प्राचीर' में बेगार प्रथा का भी अपेक्षित चित्रण हुआ है। यहाँ जमींदार गजेन्द्रसिंह के मुंशी जी भी सिपाहियों से बेगार लेते है।

7. अशिक्षा, रूढ़ियाँ और अंधविश्वास–'पानी के प्राचीर' का क्षेत्र भी ऐसा ही है, जहाँ पर भी अशिक्षा, अज्ञान और अंधविश्वास का कुहासा है। रूढ़िवादी गाँव के लोग अपने बच्चों को पढ़ाना बेकार समझते हैं– ''कैसा नालायक लड़का है, खलिहान में आई हुई लच्छिमी को छोड़कर इसकूल इसकूल मचाये हुए है। इसकूल कोई खाने को देगा? और नही तो फीस–फास, चन्दा, सीधा के मारे और नाक में दम हुआ करता है।''[16] गाँव में अशिक्षा का एक कारण उसका पिछड़ापन है। गाँव में पढ़ने के लिए सुविधाओं का अभाव है। कई कई कोस दूर तक स्कूल नहीं है।

'पानी के प्राचीर' उपन्यास में भूत प्रेत सम्बंधी परिकल्पनाओं एवं अंधविश्वासों के साथ ही विभिन्न रूढ़ियों का निरूपण हुआ है, जैसे बच्चों को किसी की बुरी नजर से बचाने हेतु दिठौना लगाना, विधवा का मुँह देखना आदि विश्वासों का यहाँ यथार्थ चित्रण हुआ है।गेंदा विधवा हो जाती है तो उसका मुँह देखना किसी को अच्छा नहीं लगता, अपशगुन माना जाता है– ''मैं राँड हूँ लोग मेरा मुँह देखना पाप समझते हैं। शायद इसीलिए लोग कहीं जाते वक्त मुझसे बचने की कोशिश करते हैं और यदि संयोग से दिखाई पड़ गई तो लोग लौट आते हैं। और तो और अपना भाई (जिसे मैं सहारा समझे थी) मेरा मुँह देखना नहीं चाहता।''[17]

8. लोक तत्त्व एवं उपादानों का अंकन– 'पानी के प्राचीर' उपन्यास मँ लेखक ने ऋतुओं के विकराल और आकर्षक चित्र, प्रकृति परिवेश, पर्व त्योहार, लोक गीत, लोक भाषा तत्त्वों का निरूपण किया है। इसके साथ ही फसल की कटाई–बुवाई और निराई के परिदृश्य इस उपन्यास में सजीव रूप में चित्रित हुए हैं।उपन्यास में फागुन मास का वर्णन करते हुए लेखक ने लिखा है– ''खेत कटकर साफ हो गए है। उनकी छोटी खूँटियाँ चाँदनी रात में नहा रही है। खलिहानों से अनाज की पकी गंध फैल रही है। दूसरी ओर अमराई से बौरों की मतवाली पुकार बुला रही है। कोयल की कूक सघन अमराई से फूट फूटकर खेतों में उड़ रही है। दूर दूर की वे घाटियाँ इसके स्वरों में डूब रही है।''[18]

अधिक वर्षा आ जाने से राप्ती और गोर्रा नदियाँ उफन जाती है और सम्पूर्ण कछार में बाढ़ आ जाती है। सब कुछ नष्ट भ्रष्ट कर देती है। परन्तु कुछ दिन बाद बाढ़ चली जाती है। यथा– ''धीरे धीरे बाढ़ खिसक गयी। धरती विधवा के समान यहाँ से वहाँ तक उदास, सपाट और भीगी हुई पड़ी थी। यहाँ वहाँ कीचड़ था मगर रास्ते खुल गए थे। किसानों की परेशानियों पर चिंताओं और परेशानियों की मोटी मोटी लकीरें उभर आई थी। कहाँ जाएँ? क्या करें?''[19]

माघ मास के प्राकृतिक एवं ग्रामीण वातावरण का यथार्थ चित्रण लेखक ने इस तरह किया है– ''माघ पुज रहा था। कछार की भूमि बहुत दिनों बाद गेहूँ–जौ की अच्छी फसल से कसमसा रही थी। दूर–दूर के सिवानों तक सरसों के उड़ते हुए रंग छाये थे।''' दस दिन के बाद मटर कटने लायक हो जाएगी। फिर मटर के सत्तू और मकुनी (मोटी रोटी) से काम चलेगा।''[20]

उपन्यास में शादी विवाह के संस्कार का भी यथार्थ रूप में चित्रण मिलता है। यहाँ शादी समारोहों में होने वाले कार्यक्रमों, परम्पराओं आदि का सजीव चित्रण हुआ है। साथ ही विभिन्न प्रकार के लोक गीतों, लोकोक्तियों मुहावरों और लोक–भाषा का निरूपण हुआ है,लोकगीतों के कुछ नमूने देखिए–

''सदा अनन्द रहे एहि द्वारे
जिये से खेले फाग रे।''[21]

कुल मिलाकर, रामदरश मिश्र ने 'पानी के प्राचीर' उपन्यास में स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व के गाँव की कहानी प्रस्तुत की है। इसकी कथा का सम्बंध पूर्वी उत्तरप्रदेश के कछार अंचल को पूर्ण रूप से प्रस्तुत करना है। वस्तुतः यह उपन्यास पाण्डेपुर गाँव के माध्यम से स्वतंत्रता प्राप्ति तक के भारतीय ग्राम की एक विशिष्ट एवं प्रामाणिक गाथा प्रस्तुत करता है। मिश्र जी ने इस उपन्यास के रचाव में संवेदना के इकहरे विधान की जगह अपनी कलात्मक दृष्टि से गाँव के संश्लिष्ट ओर समग्र यथार्थ को बड़ी गहराई से रूपायित किया है।

संदर्भ सूचीः–

1. 'रामदरश मिश्र रचनावली', भाग–5, संपादक रामदरश मिश्र एवं स्मिता मिश्र, नमन प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम सं0–2000, पृष्ठ–45
2. वही, पृ0–45
3. वही, पृ0–32
4. वही, पृ0–25
5. वही, पृ0–42
6. वही, पृ0–52
7. वही, पृ0–105
8. वही, पृ0–115
9. वही, पृ0–192
10. वही, पृ0–172
11. वही, पृ0–115
12. वही, पृ0–197
13. वही, पृ0–96
14. वही, पृ0–45
15. वही, पृ0–134
16. वही, पृ0–20
17. वही, पृ0–105
18. वही, पृ0–04
19. वही, पृ0–86
20. वही, पृ0–140
21. वही, पृ0–11